प्रातःक्लास 27.2.68 ओमशांति शिवबाबा याद हैं?

यह तो बच्चे जानते हैं कि बाप बड़ी लीवर घड़ी है। बिल्कुल एक्युरेट टाइम पर आते हैं कांटों को फूल बनाने लिए। सेकेंड भी कम जास्ती नहीं हो सकता। यह भी मीठे बच्चे जानते हैं इस समय है कलियुग कांटों का जंगल। तो फूल बनने वालों को यह महसूसता आनी चाहिए हम फूल बन रहे हैं। पहले .....कांटे थे। कोई छोटे कांटे ,कोई बड़े होते हैं। कोई बहुत दुःख देते ,कोई थोड़ा कम। अभी बाप का .....तो सभी से है। गायन भी है कांटों से भी प्यार तो फूलों से भी प्यार। पहले किससे प्यार है? जब कहेंगे .....कांटों से प्यार करते हैं। इतना प्यार है जो मेहनत कर कांटों से फूल बना देते हैं। आये ही हैं कांटों की दुनियां में और कांटे में ही प्रवेशकर फूल बनाते हैं। इसमें सर्वव्यापी की बात ही नहीं हो सकती। एक ही की महिमा होती है। महिमा होती है आत्मा जबकि शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। श्रेष्ठाचारी भी आत्मा बन ....तो भ्रष्टाचारी भी आत्मा बनती है। आत्मा शरीर धारण कर जैसे2 कर्म करती है उस अनुसार कहा जाता है यह तो कुकर्मी है। यह सुकर्मी है। यह जीव की आत्मा सुकर्मी है। आत्मा अच्छा वा बुरा कर्म करती है तब बाबा ने लिखा था कि भगवानुवाच अपने से पूछो सतयुगी दैवी फूल हो या कलियुगी आसुरी कांटे हो?कहां सतयुगी कहां कलियुगी? कहसं डीटी, कहां डेविल? बहुत फर्क है ना। जो कांटा होगा वह अपने को फूल कह न सके। फूल होते ही हैं सतयुग में। कलियुग में होते नहीं। अभी यह है संगमयुग जबकि तुम कांटे से फूल बनते हो। बाप सबक देते हैं ऐसे2 लिखो। तो मनुष्य आ(पे) ही समझे। वह जैसे (म)खमल का जूता लगाना है। समझेंगे बरोबर हम तो पुराने जूते हैं। उसमें यह भी लिखना चाहिए अगर फूल बनना चाहते हो तो अपन को आत्मा समझ और फूल बनाने वाले परमपिता परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे तमोगुणी अवगुण निकल जाये और तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। बाप ऐसे देते हैं। बच्चों का काम है करेक्ट कर रिफाइन कर छपाना। यह पत्रे ऐरोप्लेन से भी गिरानी चाहिए। तो सभी मनुष्य सोच में पड़ जाये। नारद की भी कथा है ना। नारद था भक्तों में शिरोमणी। जैसे माला के आठ दाने मुख्य हैं। इनको कहेंगे ज्ञान शिरोमणी। वह गुरू लोग सब भक्ति सिखलाने वाले हैं। ज्ञान तो एक ही बार सिखलाया जाता है। भक्ति सिखाई जाती है 63जन्म। भक्ति का ज्ञान बाप ही देते हैं। शास्त्र आदि जो भी हैं उनमें भक्ति का ज्ञान है। वास्तव में उनको भक्ति का अज्ञान कहेंगे ;परंतु अज्ञान कहने से गुस्सा लगेगा। इसलिए भक्ति का ज्ञान कहा जाता है। भक्ति से दुर्गति होती है ऐसे लिखने से भक्त लोग चिढ़ते हैं। है तो ऐसे ना। ज्ञान एक है सदगति के लिए। एक ज्ञान है दुर्गति के लिए। यह तो पढ़ाई है। बेहद के वर्ल्ड की यह है हिस्ट्री–जॉग्राफी। स्कूलों में पुराने वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी पढ़ाते हैं। नई दुनियां की हिस्ट्री–जॉग्राफी तो कोई जानते ही नहीं। तो यह पढ़ाई भी है ,समझानी भी है। कोई छी2 काम करना बेसमझ है। फिर समझाया जाता है विकारी काम दुःख देने का न करना है। दुःखर्ता–सुखकर्ता यह बाप की महिमा है ना। यहां तुम भी सीख रहे हो। किसको भी दुःख न देना है। बाप यह शिक्षा दे रहे हैं। सदैव सुख देते रहें। यह अवस्था कोई जल्दी नहीं बनती है। सेकेंड में बाप से वर्सा तो ले सकते हैं। बाकी लायक बनने में टाइम लगता है। समझते तो हैं बेहद के बाप का वर्सा है स्वर्ग की बादशाही। तुम समझाते भी होंगे पारलौकिक बाप से भारत को विश्व की बादशाही मिलती है। तुम विश्व के मालिक थे। यह तुम बच्चों को अंदर में बहुत खुशी रहनी चाहिए। कल की बात है.....स्वर्ग के मालिक थे। मनुष्य तो कह देते हैं लाखों वर्ष। कहां एक2 युग की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं। कहां सारी कल्प की आयु 5000वर्ष है। बहुत फर्क है ना। ज्ञान का सागर एक ही बेहद का बाप है। उनसे दैवी गुण भी धारण करनी चाहिए। यह दुनियां के मनुष्य तो दिन प्रतिदिन तमोप्रधान ही बनते जाते हैं। और ही जास्ती अवगुण सीखते हैं। आगे थोड़े ही

करप्शन ,एडल्ट्रेशन, भ्रष्टाचार आदि था। दिन प्रतिदिन तमोगुण बढ़ता जाता है। और यहां तुम बाप की याद के बल से सतोप्रधान तरफ जा रहे हो। जैसे उतरते हो फिर जाना भी ऐसे है। पहले तो बाप मिला है इसकी खुशी होगी। कनेक्शन जुटा फिर है याद की यात्रा। जिसने जास्ती भक्ति की होगी उनकी जास्ती याद की यात्रा होगी। बहुत बच्चे कहते हैं बाबा याद ठहरती नहीं है। भक्ति मार्ग में भी ऐसे होता है क्या? सुनने बैठते हैं बुद्धि और2 तरफ भाग जाती है। सुनाने वाला देखता रहता है। फिर अचानक पूछेंगे हमने क्या सुनाया? फिर जैसे कि वायरे हो जावेंगे। कोई तो झट बता देंगे। एक जैसे सबको तो नहीं होती। भल यहां बैठे हैं, सुनते हैं ;परंतु धारणा कुछ भी नहीं होगी। अगर धारणा हो तो फिर कमाल कर दिखावें। वह अपना और दूसरों का कल्याण करने बिगर रह न सके। भल किसको घर में बहुत सुख है, महल ,मोटरें आदि हैं ;परंतु एक बार तीर लग गया तो बस पति को भी कहेंगे हम यह रुहानी सर्विस करने चाहती हूं। नहीं। अच्छा, नहीं तो हम डायबोर्स देते हैं। शिवबाबा को डायबोर्स दे सकते हैं तो पति को देने में क्या है? परंतु माया बड़ी जबरदस्त है। करने न देती है। मोह है ना। इतने महल, इतने सुख सब कैसे छोड़े? अरे, यह इतने सब जो भागे बड़े2 लखपति–करोड़पति घर के थे। छोड़कर चले आये। यह तकदीर दिखाते हैं। इतनी ताकत नहीं है छुड़ाने का। रावण के जंजीर में इतनी जकड़ी हुई हैं। यह है बुद्धि की जंजीर। बाप समझाते हैं अरे, तुम तो स्वर्ग के मालिक पूजने लायक बनते हो। बाप गैरंटी करते हैं 21जन्म तुम बीमार नहीं पड़ेंगे। एवर हेल्दी रहेंगे। तुम भल रहो पति के पास सिर्फ उ(न)से छुट्टी लो पवित्र बनूंगी और बनाउंगी। यह तो तुम्हारा फर्ज है बाप को याद करना। जिससे अपार सुख मिलता है। याद करते2 तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। कितनी समझ की बात है। शरीर पर भरोसा नहीं है। बाप की तो बन जाओ। उन (जैसा) प्यारी वस्तु दूसरी कोई है नहीं। बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। कहते हैं जितना चाहिए सतोप्रधान बनो। तुम अपार सुख (देखेंगे)। पति को बोलो भगवानुवाच काम महाशत्रु है। जैसे वह शंकराचार्य वाला किताब था, लिखा था नारी नर्क का द्वार है। परमपिता परमात्मा शिव आचार्य कहते हैं नारी स्वर्ग का द्वार है। स्वर्ग का द्वार बाप इन नारियों से खुलवाते हैं। माताओं पर ही कलश रखा जाता है। माताओं को ही ट्रस्टी बनाया। सब कुछ तुम सम्भालो। बाप ने इन द्वारा कलश रखा ना। शास्त्रों में फिर लिख दिया है सागर मंथन किया। फिर अमृत का कलश लक्ष्मी को दिया। बाप कहते हैं माताओं पर ही कलश रख। फिर उन्होंने सबको दिया। अभी तुम जानते हो बाप स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। तो क्यों न हम बाप से वर्सा (पा)वें? क्यों नहीं विजयमाला में पिरोये जावें। महावीरणी बनें। दिलवाला मंदिर में महावीर और महावीरणी दोनों के चित्र हैं। महावीरणी को अंदर कोठरी में रखा है। महावीर को बाहर में। वह घर के घरेत्री अंदर बैठी है। ....कोई मेल–फीमेल तो है नहीं। यह है एडॉप्शन। बेहद का बाप गोद में लेते हैं। किसलिए? स्वर्ग का मालिक बनाने लिए। एकदम कांटों को बैठ शिक्षा देते हैं। प्रवेश भी कांटे में किया है। तो कांटों पर भी प्यार है ना। तब तो उनको फूल बनाते हैं। बाप को बुलाते ही हैं पतित दुनियां में, पतित शरीर में। निर्वाणधाम छोड़कर यहां आओ। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार हमको भी आना पड़ता है। नम्बरवन कांटे में आकर नम्बरवन फूल बनाता हूं। तो जरूर प्यार है ना। प्यार बिगर फूल कैसे बनावेंगे? अभी कलियुगी कांटे से सतयुगी फूल देवता विश्व के मालिक बनो। कितना प्यार से समझाया जाता है। कुमारी फूल है तभी तो सब कांटे चरणों में गिरते हैं। वह फिर कांटा बनती है तो सबको माथा टेकना पड़ता है। तो क्या करना चाहिए?.....का फूल रहना चाहिए तो एवर फूल बन जावेंगे। कुमारी तो निर्विकारी है ना। भल जन्म विकार से लिया है। सन्यासी भी तो विकार से जन्म लेते हैं। शादी आदि कर फिर पीछे घर–बार को डोहाग देते हैं। धणी चला जाता है तो सभी निधनण के बन जाते हैं। कितना दुःख देकर जाते हैं। फिर उनको महान आत्मा कैसे कह सकते? महान आत्मा तो कृष्ण को कहते हैं। कहां वह सतयुग का महात्मा ,विश्व का मालिक ,कहां यह कलियुगी। तब

बाबा (ने) कहा था प्रश्न लिखो। कलियुगी कांटा हो (या) सतयुगी फूल हो?भ्रष्टाचारी हो या श्रेष्ठाचारी हो? यह है भ्रष्टाचारी दुनियां। जबकि रावण का राज्य है। कहते भी हैं आसुरी राज्य राक्षस राज्य है ; परंतु अपन को कोई समझते थोड़े ही हैं। अभी तुम बच्चे युक्ति से समझते हो। लिखते ही ऐसा युक्ति से हो जो वह आपे ही समझे बरोबर मैं तो इस तरफ का हूं। मैं तो कामी–क्रोधी कलियुगी कुत्ता हूं। लोभी भूत हूं। प्रदर्शनी में भी तुम ऐसा.....जो आपे ही उनको फीलिंग आये हम तो कलियुगी कांटा हैं। अभी तुम फूल बन रहे हो। बाप तो एवर.....है। वह कब कांटा नहीं बनता। बाकी सभी कांटे बनते हैं। वह फूल कहते हैं। तुमको भी कांटा से फूल बनना है तो मुझे याद करो। माया कितनी प्रबल है। तो क्या तुमको माया का बनना है? बाप तुमको अपने तरफ (खैंचते) हैं, माया अपनी तरफ खैंचती है। यह है पुरानी जूती। आत्मा को पहले2 नई जूती मिलती है। फिर पुरानी होती ....। इस समय सभी तमोप्रधान जूतियां हैं। मैं तुमको मखमल का देता हूं। वहां आत्मा प्योर होने से शरीर भी .....जैसा होता है। नो डिफेक्टेड। यहां तो बहुत डिफेक्ट्स होते है। वहां फीचर्स तो देखो कितना सुंदर है। वहां के फीचर्स तो कोई यहां बना न सके। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको कितना उंच बनाता हूं। गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान पवित्र बनो और जन्म जन्मांतर की जो कट चढ़ी हुई है उनको निकालने योग अग्नि है। इसमें सभी भस्म हो जावेंगे। तुम पक्का सोना बन जावेंगे। खाद निकालने की युक्ति तो बड़ी.....बताते हैं। मामकम् याद करो तुम्हारी बुद्धि में यह ज्ञान है। आत्मा भी बहुत छोटी है। बड़ी हो तो इनमें प्रवेश कैसे करे? आत्मा को देखने लिए बहुत माथा मारते रहते है डॉक्टर लोग ;परंतु देखने में नही आती है। सा. होती है। अच्छा, समझो तुमको वैकुठ का सा. होता है। इससे सिद्ध होता है पुरानी दुनियां खतम होनी है। तो नई दुनियां का सा. होता है ;परंतु वैकुठ में चले जो(तो) नहीं जावेंगे। इसके लिए तो पुरुषार्थ करना पड़े। सा. से कोई फायदा नहीं होता है। बने तब जब योग का अभ्यास करे। तो पहले कांटो से प्यार होता है। यहां तो बहुत कांटे हैं। तो भी बाप मीठे2 बच्चे कहते रहते हैं। प्यार है ना। सबसे जास्ती प्यार का सागर है बाप। तुम बच्चे भी मीठे बनते जाते हो। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। आत्मा भाई2 को देखो तो क्रिमिनल खयालात बिल्कुल उड़ जावेगी। भाई–बहिन की सम्बंध से भी बुद्धि चलायमान हो जाती है। इसलिए भाई को देखो। वहां तो शरीर ही नहीं जो भान आवे। याद ,मोह की रग आवे। आत्मा तो नंगी है। तो अभी भाई–बहिन के सम्बंध में नहीं ठहरना है। बाप आत्माओं को पढ़ाते हैं तो तुम भी अपन को आत्मा समझो। यह शरीर तो विनाशी है। इनसे थोड़े ही दिल लगानी है। सतयुग में इनसे प्रीत नही होती है। मोहजीत राजा की कथा सुनी है ना। बोलो आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेगी। ...पार्ट मिला हुआ है। मोह क्यों रखें? इसलिए बाप भी कहते हैं खबरदार रहना है। अम्मा मरे, बीबी मरे तेा भी हलवा खाना। प्रतिज्ञा करो कोई भी मरे हम रोवेंगे नहीं। मां जैसी प्यारी कोई चीज नहीं होती। उनको पार्ट बजाना चली गई। तुम अपना पुरुषार्थ करो। मम्मा याद करती है, न करती है उसमें तुम्हारा क्या जाता है? तुम अपने बाप को याद करो। सतोप्रधान बनो। और कोई रास्ता नहीं। पुरुषार्थ से ही विजयमाला के दाना बनेंगे। पुरुषार्थ से जो चाहो बन सकते हो। बाप तो समझते हैं कल्प मिसल ही पुरुषार्थ करेंगे। बाप तो है ही गरीब निवाज। दान भी गरीबों को किया जाता है ना। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूं। न गरीब ,न साहुकार। तुम बच्चे ही जानते हो। भारतवासियों का पार्ट है गाली देना, ग्लानी करना। जिस भारत को इतना उंच बनाया उन्होंने ही कितनी टूमच .....की है। ठिक्कर–भित्तर में ठोंक दिया है। अभी बाप कहते हैं तुम्हारे लिए धर्म स्थापन करता हूं। वहां दुःख का (नाम) नहीं। जिनको सुख देता हूं वही फिर कांटे बन गाली देने लग जाते हैं। कितनी ग्लानी करते हैं। मेरी तो .....की भी । अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का याद प्यार ,गडमार्निंग। मीठे बच्चों को नमस्ते।